भारत मे अंतकवादी गतिविधियाँ

[THE ACTS OF TERRORISM IN INDIA]

Name: Sheela Devi (Karnal)
Political Science

आंतकवाद की उत्पति केवल एक दिन या एक घटना का परिणाम नही होती बल्कि एक लम्बे समय तक चले घटनाक्रम का परिणाम होती है। आदिकाल से ही मनुष्य के व्यावहार का यह सम्भावित रूप है। इसलिए आदिकाल से ही व्याक्ति के व्यावहार के इस रूप मे समाज को प्रभावित होना पडा।

समाज की जटिलता के साथ विज्ञान के परिणाम से समाज के बदलते स्वरूप से मनुष्यता की मनौवैज्ञानिकता मे इा प्रवृति मे और भी वृद्वि हुई राष्टो मे जातीयता,क्षेत्रीयता,धार्तिकता व उग्र राष्टवाद के आधार पर ऐसे विषयो की अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर उत्पति हुई जिन्होने न केवल कुछ राष्ट्रों प्रभावित किया बल्कि धीरे-धीरे पूरे विश्व को प्रभावित किया।

अंर्तराष्ट्रीय आंतकवाद की व्यापक रूप मे शुरूआत को 1948 से हुआ माना जा सकता है। 1948 के बाद भारत व पाक्स्थिान के बीच कश्मीर का विवा एक ऐसा विफोटक बन गया जिसके कारण दोनो देशो मे आंतकवादी गतिविधियाँ प्रांरभ हो गई। अमेरिका व सोवियत संघ के बीच छिडे शीत युद्व, शस्त्रीकरण, हथियारो की दौउ,परोक्षयुद्व व जातीय युद्वो ने अर्तराष्टीय आंतकवाद को और अधिक बढाया है।

इस प्रकार से अर्न्तराष्ट्रीय आंतकवाद अर्न्तराष्ट्रीय शान्ति व सुरक्षा व मानवीय जीवन के लिए सबसे बडा खतरा है। आंतकवादी वातावरण मे काई भी व्यक्ति सुरक्षित नही होता चाहे वह निर्दोष हो या दोषी, साधारण नागरिक हो या कोई नेता।

1990 से आज तक भारत पार सीमा आंतकवाद का सामना कर रहा है। जिसमे अरबो खरबो की सम्पति का नुकसान हुआ व हजारो की संख्या मे निर्दोष लोग मारे गये। भारत की राजधानी मे भारत की संसद भी सुरक्षित नही रही जब पाक्स्थिान ने आंतकवाद से प्रभावित संसद पर आक्रमण कर दिया।

अनेक देशो ने अपने-अपने देशो मे आंतकवाद से लडने के लिए अलग-अलग सख्त कानून बनाए। भारत ने भी अपने यहा आंतकवाद व इस प्रकार से गम्भीर अपराधो के खिलाफ पी.ओ.टी.ए. नाम का एक कानून बनाया।

पाल विल्किसन ने निम्नलिखि तमे भेद करना बताया है- 1. युद्व आंतक 2. दमनात्मक आंतक 3. क्रातिकारी आंतक 4. उपक्रातिकारी आंतक राजनीतिक तथा वैचारिक प्रयासो मे किए गए कृत्य, जो राज्य स्तर पर अधिकार करने के लिए किए गए अभियान के भाग नही होते।

''आंतकवाद हत्या, हिसां प्रयोग, फिरौती या अन्य मांगो के लिए मनुष्य के बन्धक बनाने और स्वतन्त्रता का बलात् अपहरण करने के लिए विशेष संगठन या गुट बनाने और लक्षित अर्न्तराष्टीय अथवा अर्न्तराष्टीय रूप अभिप्रेरित राष्टीय घटना अथवा अन्य गतिविधि है आंतकवाद का मतलब इमारतो का विनाश, उनमे लूटमार और इसी प्रकार के अन्य काम भी हो सकते है।''

आंतकवादी वह है जो अपनी मांगे मनवाने के लिए चरम हिसां का प्रयोग करके व्यक्ति विशेष समाज डाले अर्थात आंतकवाद का आश्य है, अपनी मांगे मनवाने के लिए बल प्रयोग।

भारत मे आंतकवादी कार्यवाही का अधिक चिन्ताजनक और अधिक बढतर रूप सिंख के रूप मे देखा गया। स्थिति 1983 से चली आ रही थी। भिण्डरावाले के सरंक्षण मे सिखों के उग्रवादी संगठनो- 'सिख स्टुडेण्ट्स फेडरेशन' और 'दशमेश रेजीमैंट' तथा 'बब्बर खालसा' के सदस्यो ने देश मे आंतकवाद की समस्या वे लोग मोटरसाइकिल पर सवार पर सवार होकर हत्याए करनेए बम-विस्फोटक करने और एक विशेष समप्रदाय के निर्दोष लोगो की हत्याए करने की और सलग्न हुए।

1984 मे जब सिखों की गतिविधियाँ अपने शीर्ष पर पहुच गई तो सरकार ने 'आप्रेशन ब्लू स्टार' संगठित कर आंतकवाद के केन्द्र मे सेना का प्रवेश करवाया। इस कार्यवाही मे बडी संख्या मे सिख आतंकवादियो को गिरफतार किया गया और सेना को ग्रामीण इलाकों से आंतकवादियों की धरपकड के लिए भी कार्यवाही की। उस समय यह समझा गया था कि सरकार ने आंतकवाद की रीढ़ की हड्डी तोड दी है। परतु यह बात उस समय गलत साबित हुई जब 30 अकटूबर 1984 को सिखों आदोलन से जुडे हुए श्रीमति गांधी के ही दो अंगरक्षको ने ही श्रीमति गांधी की हत्या कर दी। श्रीमति गांधी का नाम 'आप्रेशन ब्लू स्टार' मे सिंख आंतकवादी गुप्रो की हत्या सूची मे शामिल था।

देश के नवीन राजनीतिक नेतृत्व द्वारा सेचा गया कि केवल कठोरता का व्यवहार ही आंतकवाद को समाप्त नही कर सकता और 'कठोरता तथा सद्भावना' के आधार पर मूल समस्या को हल किया जाना चाहिए। इस नीति के आधार पर 24 जून को प्रधानमंत्री राजीव गांधी और लोगोवाल के बीच 'पजांब समझौता' सम्पत्र हुआ लेकिन इस समझौते के बाद भी क्रम जारी रहा और आंतकवाद प्रवृति ने ही 20

अगस्त 1985 को गुरूद्वारे मे ही संत लागोवाल की हत्या कर दी। और फिर उनके द्वारा पजांब के मुख्यमंत्री बेअंत सिंह की हत्या (31 अगस्त 1995) ने एक बार फिर समूचे राष्ट को झकझोर कर दिया।

हमारा जम्मू और कश्मीर राज्य देश के विभाजन के बाद से ही पाकिस्तानी कूटनीतिक चाल का प्रमुख केन्द्र बिन्दु होने के कारण द्विराष्ट सिद्वान्त की उसकी सकंल्पना के अनुसार वह 1947 के विभाजन को हमेशा अधूरा माानता रहा है। उसने इस राज्य को हथियाने के लिए बापर-बार प्रयत्न किए- पहली बार सैनिको के सक्रिय समर्थन के साथ कबाइलियो की घुसपैठ करवा कर और उसके बाद तीन युद्व करके तथा वर्ष 1999 मे कारगिल मे अविवेकपूर्ण घुसपैठ के द्वारा लेकिन हर बार उसे मुह की खानी पडी, हर बार भारत ने उसे करारा जवाब दिया है। नवंबर 2000 को भारत द्वारा कश्मीर मे घोषित एकतरफा सघंर्ष विराम मई 2001 तक चला।

पाकिस्तान की गुप्तचर शाखा आई.एस.आई. कें इशारे पर 13 दिसम्बर 2001 की सुबीह 11:40 बजे भारतीय संसद पर जैश-ए-मोहम्मद और लकश्र-ए-तोयबा से जुडे आंतककारियो ने हमला बोल दिया। आंतककारी संसद भवन परिसर मे बाहरी सुरक्षा को तोड कर घुस गए। इनमे से एक मानव बम भी था। यदि इन पाँचो आंतककारियो को सुरक्षाकर्मियो ने मार नही दिया होता तो इनका निशाना भारत का शीर्ष राजनीतिक नेतृत्व था।

जम्मू कश्मीर मे 14वीं लोकसभा के लिए मतदान अप्रैल-मई 2004 मे चार चरणो मे हुए। अलगाववादियो द्वारा बहिष्कार आहान और आंतकवादी सगंठनो की धमकियो के बावजूद मतदान का कुल प्रतिशत 35.21 रहा जो चुनाव मे विभिन्न स्थानो के मतदान प्रतिशत की तुलना मे बहुत अच्छा है।

नवंबर 2004 मे प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने जम्मू कशमीर राज्य के दो दिन के दौरे के समय शान्ति के लिएउ नई शुरूआत और वायदा करते हुए 24 हजार करोड़ रूपए के आर्थिक पैकेज की घोषणा की। प्रधानमंत्री ने राज्य के विकास के लिए विकास योजनाएं लगाने और रोजगार सृजन वायदा किया।

हाल ही के वर्षो मे जम्मू-कश्मीर मे हिंसा और तनाव के स्तरो मे कमी आई है, यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि लाख से अधिक पर्यटक घाटी मे आए तथा लगभग 4 लाख तीर्थयात्रियो ने अमरनाथ की यात्रा की, जबकि वर्ष 2003 मे यह संख्या 1.5 लाख थी।

भारत के लिए सबसे बडी चुनौती पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित छाया युद्व और आंतकवाद है। संसद और कश्मीर विधानसभा पर हमला भारतीय लोकतन्त्र की नीव पर हमला है।

असम मे 1947 से ही पाकिस्तान के पूर्वी क्षेत्र से व्याक्तियो का आना जारी था, जो कभी कम और कभी अधिक 1970 तक जारी रहा। 1971 मे स्वाधीन बांग्लादेश के लिए आन्दोलन और बाद मे स्वाधीन

बांग्लादेश की स्थापना से असम मे आने वाले अवैध घुसपैठियो की संख्या लाखो मे हो गई। अतः 1979 से ही अखिल असम छात्र संघ और असम गण संग्राम परिषद् ने विदेशियो को असम से वापिस भेजने की मांग को लेकर आन्दोलन आंरभ कर दिया।

1989 के अन्तिम महीनो से ही असम मे एक नया आतंकवादी संगठन 'उल्फा' खडाहो या। इस संगठन ने अपना लक्ष्य स्थापित किया 'असम के सम्प्रभु राज्य की स्थापना' अर्थात भारत संघ से अलग सम्प्रंभु असम राज्य की स्थापना। उल्फा ने हिंसक आन्दोलन,जबरन वसूली अपहरण और हत्या के तरीके अपना लिए। 1991 के प्रारम्भ से ही उल्फा की आंतकवादी गतिविधियो मे बहूत अधिक वृद्वि हो गई। भारत सरकार ने उल्फा की आंतकवादी गतिविधियो से प्रभावित क्षेत्र का 'अशान्त क्षेत्र' घोषित किया और उल्फा के विरूद्व 'आप्रेशन बजरंग' के नाम से सैनिक कार्यवाही की, लेकिन शान्ति स्थापित करने के लिए आशिंक सफलता प्राप्त की जा सकी।

Name: Sheela Devi, Add. H.No. 1193, Sec-9, Karnal - 132001